CORE
Metadata, citation and similar papers at core.ac.uk
Provided by CMFRI Digital Repository

ISSN: 0972 - 2351

मत्स्यगंधा
2003

मात्स्यिकी और जीविकोपार्जन

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
कोचीन - 682018

कर्कट कृषि और ग्रामीण विकास

एस. लक्ष्मी पिल्लै और ई.वी. राधाकृष्णन
सी एम एफ आर आइ का कालीकट अनुसंधान केन्द्र, केरल

भारत में मैंग्रोव कर्कट अथवा हरा कर्कट का महत्व पिछले कुछ सालों में बहुत बढ गया है। विदेशी राज्यों, जैसे सिंगपूर, मलेशिया तथा होंकोंग में भारत से हरे कर्कटों का निर्यात बढने के कारण मछुवारे इसका अधिक विदोहन और प्रग्रहण में जुट गये हैं। हरे कर्कटों का पालन, वाणिज्यक रूप में थैलेण्ड, मलेशिया एवं फिलिप्पैन्स में किया जा रहा है। भारत में कर्कटों का पालन तमिलनाडु, आन्ध्रा प्रदेश और केरल के तटवर्तीय प्रदेशों में आमदनी बढाने का एक मुख्य भाग है। कर्कटों को सजीव रूप में तथा संसाधन करके निर्यात किया जाता है। साधारणतया इन कर्कटों को अवतरण स्थान में ही छांटकर नीलाम कर देते है। एफ.ए.ओ.नीति 162 के अनुसार 10 से. मी. कारापेस विस्तीर्ण से कम और 200 ग्राम भार से कम सजीव कर्कटों का निर्यात मना गया है। निर्यात के लिए कर्कटों को चार वर्ग में बटोरा है।

कम आकार वाल	-	250-300 ग्रा
सामान्य आकार वाला	-	300-500 ग्रा
बडा	-	500-800 ग्रा
सबसे बडा	-	850-1000 ग्रा और ज्यादा

प्रग्रहण के लिए 'दो जाति या वर्ग के कर्कटों का उपयोग किया जाता है- *सिल्ला सेरेटा* एवं *सिल्ला ट्रॉकुबारिका*। *सिल्ला सेरेटा, ट्रॉकुबारिका* से ज्यादा बडा होता है। भारत में ये दोनों जातियाँ मैंग्रोव प्रदेशों खारा, पानी और तटीय जलों में प्राप्त होते हैं।

वाणिज्य रूप में हरे कर्कटों का कृषिकर्म दो तरह से किया जाता है। एक तरीके में, तरुण या किशोर कर्कटों को मिट्टी के बने तालाब में बिक्री परिमाण अथवा 3-7 महीनों तक पाला जाता है जिसे ग्रो-औट कहते है। दूसरे तरीके में, समान्य दर्जों के या बडे कर्कटों को, ज्यादातर जो छिलका निकाल चुके है, उन्हें पिजंडा या तालाब में 20-30 दिनों तक पाला जाता है। इतने दिनों में इनका आवरण मजबूत हो जाता है और भार भी बढ जाता है। इस तरीके को फेटनिंग कहते है।

तालाबों में सिर्फ कर्कटों को पालने की रीति को 'मोनोकल्चर' और कर्कटों के साथ अन्य मछलियों के पालन को 'पोलीकल्चर' कहते है। 0.3-0.5 हेक्टेयर के छोटे तालाब, जिनके नीचा तल बालु या गीली मिट्टी का है, कर्कट कृषि के लिए सबसे अनुयोज्य है। तालाबों के चारों तरफ बाँध बनाया जाता है। कर्कटों का बाँध चढकर बाहर निकल जाने की सम्भावना होने के कारण, बाँध के ऊपर बाँस की लकडी या आस्बेटोस से चहारदीवारी का निर्माण किया जाता है। कर्कट राक्षसपन प्रकृति के होते है, इसलिए तालाब में सिमेंट पैप या बॉस के टुकडे रखे जाते है, जिसमें कर्कट शरण ले सके और एक दूसरे पर हमला न करे। ज्वार-भाटा जल का अन्दरी तथा बाहरी बहाव जल मार्ग द्वारा होता है।

कर्कटों (पालन जीव) के प्रग्रहण को आरंभित करने से पहले तालाब की तैयारी की जाती है। तालाब में मौजूद जल को बाहर बहाकर उसमें चूना डाला जाता है और तालाब को सुखाया जाता है। मोनोकल्चर के लिए छोटे कर्कटों को 2-3/मी की मात्रा में पाला जाता है। पोलीकल्चार में इनकी संख्या सुविधा अनुसार कम किया जाता है। कर्कटों को असार मछलियों या मुर्गी के निष्प्रयोजक भागों को, 5-10 शरीर भार की मात्रा में खिलाया जाता है।

3-4 से.मी. कारापेस् विस्तीर्ण के किशोर कर्कट 5-6

पत्रव्यवहार : श्रीमती एस. लक्ष्मी पिलै और डॉ. ई. वी. राधाकृष्णन, प्रभागाध्यक्ष सी एफ डी, केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन - 682018

महीनों में बिक्री के योग्य अथवा 200-300 ग्रा के हो जाते है और बडे कर्कट जो कि 100-200 ग्रा भारी होते है, वे 4-6 महीनों में 400-600 ग्रा भार के हो जाते है। कर्कट बिक्री योग्य हो जाने पर, तालाब के जल को मोटोर पम्प द्वारा निकालकर, कर्कटों का संग्रहण किया जाता हैं जो कर्कट तालाब में रह जाते है उन्हें फन्दाजाल से निकाला जाता है। फेटनिंग के लिए उपयोग किया जाने वाला तालाब, 0.1-0.2 हेक्टेयर के होते है, जिसमें जल 1-1.5 मी गहराई में होनी चाहिए। इसमें भी, ग्रो-औट की तरह ही पानी का अन्दर तथा बाहर को बहाव, जल मार्ग द्वारा होता है और बण्ड में चहारदीवारी भी होती है। तालाब में कर्कटों को 1-3/ मी की मात्रा में पाला जाता है। तालाब के अतिरिक्त सुपारी वृक्ष की लकडी या बाँस की लकडी के पिंजड़े को तालाब में रखकर भी कर्कट पाला जा सकता है। केरल में ऐसे कर्कट पालन रीति प्रचलित है।

ताइवान के कर्कट तालाब छोटे माप-50-600 मी के होते है। प्रतिदिन कर्कटों को 200 ग्रा/कर्कट असार मछली एवं घोघां खिलाया जाता है। सूरत पानी प्रदेश में कर्कट फेटनिंग बहुत ही लाभदायक माना जाता है। यहाँ असार मछलियों को काटकर खिलाया जाता है।

अन्ताराष्ट्रीय बाज़ार में, कर्कटों का मूल्य बहुत ही बढ गया है। इसी कारण अन्य जल जीवियों से ज्यादा, इनका संवर्धन या प्रग्रहण अत्यधिक लाभदायक माना जाने लगा है। दोनों प्रकार के प्रग्रहणों में फेटनिंग अधिक लाभकारी है, क्योंकि इसको पालने केलिए खर्चा कम है लंबे समय तक सजीव रख सकते है और बाज़ार में इनकी मांग ज्यादा है। फिलिप्पैन्स में एक हेक्टेयर के कर्कट तालाब को विकसित करने के लिए प्राथमिक मूल्य 25000 रु. है और 5000 कर्कट/हेक्टेयर को तीन महीने पालने के लिए खर्चा रु. 57000 है। पहले उपज से प्राप्त आमदनी 57000 रु. है और निकासी-प्राथमिक मूल्य रु. 33,000 है। केरल के वैपीन में कर्कटों के छ उपजों से 1,11,550 रु. का लाभ बताया गया है।

बंगाल की खाडी के किनारे वाले राज्यों में कर्कट कृषि में बहुत ही रुचि प्रकट दिखायी दे रही है। भारत की आयनवृत्त ऋतु, विस्तीर्ण तथा कृषि योग्य भूमि एवं कम मूल्य की मजदूरी, सभी कर्कट कृषि के विकास की ओर अनुकूल वातावरण दर्शाता है। कर्कट कृषि, एक व्यवसाय के रूप में विकसित किया जा सकता है, जिससे, ग्रामीण् जनता को काम काज और आमदनी प्राप्त हो सके।

मुख्य शब्द - Keywords

ग्रो आऊट - grow out (वर्धन तालाब)

फेटनिंग - fattening (छिलका उतारे सामान्य दर्जे के कर्कटों को 20-30 दिनों में आवरण मज़बूत होने तक पालन करने की रीति)

असार मछली - trash fish (low cost fishes)

घोंघा - shell fishes

सिल्ला सेरेटा - (*Scylla serrata*)- Green mud crab

सिल्ला ट्रानकुबारिका - (*S.tranquibarica*)- Mud crab.

कारापेस - Carapace (केकडे का पृष्ठवर्म)